# कोरोना–19 कोरोना (द्वितीय)

कोरोना शिखर चढयौ, ज्यो रश्मि आदित्याय । संक्रमण के संग संग, मानुष मरण अधिकाय ।।
ऊंच्च आरोग्य शिल्प स्तर, क्रियाहीन नाकाम । विद्या धन न असरदार, प्रभावहीन सकाय ।।
विमूढ़ विश्व विभूतियां, पल पल दृष्टि प्रसार । अनुपयोगी साबित हुए, उच्च प्रबंध आसार ।।
राजाज्ञा शिथिल हुई, अनुशासन अवहेल। ध्वजा उड़ी संयमित जीवन रचौ प्रमादित खेल ।।
लोकबंदी अमर्यादित हुई, आत्मसंयम प्रमाद । तार तार सामाजिक दूरी, बिखरे सर्व संवाद ।।
नियम संयम अनुपालन में, रोगी हुए हैरान । पुलिस ए मीडिया ए नर्स, संग डॉक्टर जन परेशान ।।
दाम्पत्य जीवन सुख तजौ, ममता मोह संतान । आत्म समर्पण चौकसी कोरोना वीर महान ।।
श्रमिक जन विचलित हुए, टूटो धीरज बांध । मातृभूमि के मोह में, शोक चिंता संसाध ।।
लौह पथ गमन खुला, श्रमिक अध्येता संग । उत्तर पश्चिमी प्रांत से द्विरागमन समरंग ।।
अविवेकी और स्वार्थी, राजनीति परिपूर्ण । भ्रम फैलावे राष्ट्र में षडयंत्र सम्पूर्ण ।।
चलती चक्की रुक गई थम्यौ अर्थ संसार । मादक तेल जिन्स पर कराधान भरमार ।।
मंदिर मस्जिद बन्द है, ताला बंद भगवान । मयखाना चालू किया, महा मंडित अज्ञान ।।
गत वायरस अनुभव मिले, संग संग राखो वास । टीका इंजेक्शन शौध कर, आत्म सात अविनाश ।।
सूर्यवंशी रघू-समक्ष, प्रकटे कोरॉना प्रथम । अनुशासन पर्व समझ किन्हो विदा अभय अगम ।।
काल सर्प महायोगवश, कोरोना बलवान । शनै शनै निर्वल हो, पंद्रह जुलाई मान ।।
प्राण चक्र अविरल गति, आयुर्वेद निदान । अश्वगंधा गिलोय तुलसी, महावीर सिंह संज्ञान ।।

**महावीर सिंह चौहान**
सेवा निवृत वरिष्ठ बैंक प्रबंधक
नारायणी निकेतन,अलसीसर-331025